श्री छिन्न-मस्तिकाय: नम:

सांयकाल काल की आरती

जग जननी जय जय माँ, जग जननी जय जय।
भय हारिणी भव तारिणी भव भामिणी जय जय।।
।। जग जननी।१।
तू ही सत्चित सुखमय, शुद्ध ब्रह्म रूपा माँ।
सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिवं-सुर-भूपा माँ।।
।। जग जननी।२।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अग अज आनन्द राशी माँ।।
।। जग जननी।३।
अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी माँ।
कर्त्ता विधि भर्त्ता हरि हर संहारकारी माँ।।
।। जग जननी।४।
तू विधि वधू, रमा, तू उमा महामाया माँ।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया माँ।
।। जग जननी।५।
राम, कृष्ण तू सीता, ब्रज रानी राधा माँ।
तू वाञ्छा कल्प द्रुम, हारिणी सब बाधा माँ।।
।। जग जननी।६।
दश विद्या नव दुर्गा, नाना शस्त्र करा माँ।
अष्ट मातृका योगिनी, नव नव रूप धरा माँ।।
।। जग जननी।७।

चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे। मैया शोणित....।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।
ॐ जय० ।।७।।
ब्रह्माणी रूद्राणी, तुम कमला रानी। मैया तुम.....।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी।
ॐ जय० ।।८।।
चौंसठ योगिनी मगंल गावत, नृत्य करत भैरों। मैया नृत्य.।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।
ॐ जय० ।।९।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भर्ता। मैया तुम .....।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति करता।
ॐ जय० ।।१०।।
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी। मैया वर.....।
मन वञ्छित फल पावत सेवत नर नारी।
ॐ जय० ।।११।।
कञ्चन थाल विराजत, अग्र कपूर बाती। मैया अग्र.....।
श्री माल केतू में राजत, कोटि रत्न ज्योति।
ॐ जय० ।।१२।।
भक्ति भाव कर जोरें, सन्तन गुण गाता। मैया सन्तन.....।
सुन्दर श्यामा गौरी त्रिलोकी माता।
ॐ जय० ।।१३।।
श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे। मैया जो.....।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे।
ॐ जय० ।।१४।।
ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुम को निश दिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।
ॐ जय० ।।१५।।